Ideologies of Nazism
नाजीवाद विचारधारा

इटली के फासीवाद की तरह जर्मनी के राष्ट्रीय समाजवाद (नाजीवाद) ने अपने को राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए समाजवादी व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया। जर्मनी में हिटलर ने घोषणा कर रखी थी कि वह समस्त समझौतों और गठबन्धनों का विरोध करेगा, परन्तु उसने हुसेनबर्ग के राष्ट्रवादियों के साथ गठबन्धन करके रीश्ताग (संसद) में बहुमत प्राप्त किया। राष्ट्रीय समाजवाद जर्मनी में निम्न मध्यमवर्गीय लोगों को अधिक पसन्द था। इसका कारण यह था कि मध्यमवर्गीय लोगों को मुद्रास्फीति और मन्दी में बहुत नुकसान हुआ था। इन

---

1 "A highly centralised direction of public and cultural life of a nation destroys the possibility of great learning literature and art." —*Coker*

लोगों को इस बात का डर था कि वे सर्वहारा वर्ग की श्रेणी में पहुँच जायेंगे। कार्ल मार्क्स ने उनके लिए यह भविष्यवाणी की थी। इस वर्ग में स्वयं इतनी शक्ति नहीं थी कि वह औद्योगिक वर्ग (पूँजीपति) और मजदूर वर्ग दोनों में से किसी के भी प्रहार से अकेले अपनी रक्षा कर सकता। इसलिए जब उसे राष्ट्रीय सरकार से सहायता की आशा दिखाई दी तो उसने उसका स्वागत किया। बड़े-बड़े उद्योगपतियों और व्यापारियों को यह आशा हुई कि राष्ट्रवाद, समाजवाद की बुराइयों को दूर कर देगा। उसे इस बात की उम्मीद थी कि वह मजदूर संघों के दबाव से बच जायेगा तथा शासन पर नियन्त्रण स्थापित कर सकेगा। इस तरह राष्ट्रीय समाजवाद ने हरेक वर्ग को खुशी का वचन दिया। राष्ट्रीय समाजवाद अथवा नाजीवाद का प्रवर्तक हिटलर था।

हिटलर (Hitler)—हिटलर का जन्म आस्ट्रिया के एक गाँव में 20 अप्रैल, 1889 में हुआ था। पिता की गरीबी के कारण उसे बचपन में उचित शिक्षा नहीं मिली। पिता की मृत्यु के उपरान्त वह वियना में शिल्पी का कार्य करने लगा। 1912 में वह म्यूनिख चला गया और चित्रकारी से आजीविका चलाने लगा। प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ होने पर वह जर्मन सेना में भर्ती हो गया। युद्ध में उसने अपूर्व योग्यता का परिचय दिया जिसके लिए उसे 'आयरन क्रास' मिला। युद्ध के मैदान में घायल होकर जिस समय वह पामरेनिया के अस्पताल में पड़ा हुआ था, उसी समय उसे युद्ध विराम सन्धि की सूचना मिली। यह सुनकर उसका खून खौलने लगा। उसका कहना था कि जर्मन सेना न तो पराजित ही हुई है और न पराजित की जा सकती है। उसकी पराजय का कारण उसके नेताओं की बुजदिली है।

हिटलर ने राजनीति में प्रवेश करने का निश्चय किया। अगले पाँच वर्षों तक वह म्यूनिख में साम्यवादियों की जासूसी करता रहा। उसका कुछ नये लोगों से परिचय हुआ। म्यूनिख के कुछ पुराने दोस्तों के साथ वह जर्मन वर्कर्स पार्टी का सदस्य बन गया और उसने पार्टी को संगठित करने का संकल्प लिया। हिटलर के प्रयास से पार्टी की प्रगति होने लगी। म्यूनिख में उसने अपने साथियों एवं अनुयायियों की सभा में विचार-विमर्श करके जर्मन-वर्कर्स पार्टी का नाम बदलकर राष्ट्रीय समाजवादी मजदूर पार्टी (National Socialist Labour Party) रख दिया।

रूसी आधिपत्य के समय जर्मनी की सरकार के विरुद्ध बबेरिया में ल्यूडेनडार्फ से मिलकर उसने नवम्बर, 1923 में विद्रोह कर दिया। हिटलर पकड़ा गया और उसे पाँच वर्ष की सजा हो गयी। जेल में उसने *मीन काम्फ (Mein Kampf)* की रचना की जो बाद में नाजियों की बाइबिल बन गयी। इस पुस्तक में जर्मन जाति को एक सूत्र में बाँधकर एक विशाल जर्मन साम्राज्य की स्थापना करने का विचार प्रकट किया गया था। हिटलर को पाँच वर्ष की सजा हुई थी, किन्तु आठ माह पश्चात् ही 1924 के अन्त में उसे रिहा कर दिया गया। 1925 से 1929 तक वह अपनी पार्टी का संगठन करता रहा। सब जगह नाजी पार्टी की शाखायें स्थापित की गयीं।

1930 का आर्थिक संगठन नाजीवादियों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। जर्मनी में उस समय बहुत-से कारखाने बन्द हो गये और लाखों श्रमिक बेकार हो गये। इस बेकारी में नाजीवादियों ने अपने सिद्धान्त का बहुत प्रचार किया। 1933 में रीहस्टाग (Reichstag) (संसद) के लिए चुनाव हुआ उसमें नाजी पार्टी को 230 सीटें मिलीं। यद्यपि संसद में उनकी बहुसंख्या नहीं मिल पायी थी, परन्तु अन्य पार्टियों की तुलना में नाजी लोग सबसे अधिक निर्वाचित हुए थे। राष्ट्रपति हिन्डेनबर्ग ने हिटलर को प्रधानमन्त्री बनाने के लिए आमन्त्रित किया। परन्तु हिटलर ने यह शर्त रखी कि उसे संसद के बिना ही शासन करने का अधिकार मिले। राष्ट्रपति हिन्डेनबर्ग ने यह शर्त मानने से मना कर दिया। इसलिए हिटलर ने भी प्रधानमन्त्री बनने से मना कर दिया। परन्तु हिटलर अधिक दिन तक सत्ता में आने के लोभ को न रोक सका और 30 जनवरी, 1933 में उसने प्रधानमन्त्री बनना स्वीकार कर लिया। हिटलर संयुक्त मन्त्रिमण्डल का चान्सलर नियुक्त किया गया।

हिटलर केवल प्रधानमन्त्री बनकर ही सन्तुष्ट नहीं हुआ। वह चाहता था कि संसद में उसका कोई विरोधी नहीं हो। वह संसद में पूर्ण बहुमत प्राप्त करना चाहता था। इसलिए हिटलर ने संसद को भंग कर नये आम चुनाव की व्यवस्था की, परन्तु हिटलर को पूर्ण बहुमत प्राप्त होने का पूर्ण विश्वास नहीं था। संसद में 647 सदस्य चुने जाते थे। हिटलर का अनुमान था कि इसमें 250 स्थान नाजी पार्टी को और 100 स्थान साम्यवादी पार्टी को मिल सकते हैं। हिटलर ने पूर्ण बहुमत प्राप्त करने के लिए एक षड्यन्त्र रचा। उसने सोचा कि यदि साम्यवादी दल का दमन कर दिया जाये तो उसकी 100 सीटों में से अधिकांश सीटें नाजी पार्टी को मिल सकती हैं। 5 मार्च, 1933 को चुनाव होना था परन्तु 27 फरवरी, 1933 को रीहस्टाग (संसद) भवन में रहस्यमय परिस्थितियों में आग लग गयी। यह कार्य नाजी पार्टी का था। हिटलर ने इसका दोष साम्यवादियों पर डाला

और उनके नेताओं को जेल में डाल दिया और समस्त वामपंथी दलों को निर्वाचन की स्वतन्त्रता से वंचित कर दिया। राजनीतिक दमन के इस वातावरण में चुनाव हुए जिसमें नाजी दल को संसद में बहुमत प्राप्त हो गया और नाजी दल का मन्त्रिमण्डल बना। कुछ दिनों बाद हिटलर ने नाजी दल के अतिरिक्त अन्य दलों को अवैध घोषित कर दिया। 2 अगस्त, 1934 में राष्ट्रपति हिण्डेनबर्ग की मृत्यु होने पर एक जनमत संग्रह द्वारा राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री के पदों को मिलाकर एक कर दिया गया। हिटलर स्वयं जर्मनी का सर्वोच्च नेता (Reichs Fuhrer) बन गया। अब हिटलर राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, सेना का प्रधान, दल का प्रधान, समस्त कानूनों का निर्माता, जर्मनी का भाग्यविधाता अर्थात् सर्वेसर्वा था। उसने मुसोलिनी की भाँति सर्वाधिकारवादी शासन स्थापित किया। उसने सारे देश के आर्थिक साधनों को जर्मनी की सैनिक शक्ति प्रबल बनाने में लगाया। वर्साय सन्धि की अपमानजनक व्यवस्थाओं को छिन्न-भिन्न करते हुए सितम्बर 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध छेड़ा। इस युद्ध में आरम्भ में हिटलर को बहुत सफलता मिली। कुछ समय तक वह सारे यूरोप का भाग्य विधाता रहा, किन्तु अन्त में जर्मनी की पराजय हुई। 30 अप्रैल, 1945 को हिटलर ने अपनी नव विवाहिता पत्नी इवा ब्राउन के साथ मिलकर आत्महत्या कर ली और नाजीवादी विचारधारा का अन्त हो गया।

राष्ट्रीय समाजवाद के प्रमुख सिद्धान्त

1. नस्ल की उच्चता का सिद्धान्त—फासीवाद और नाजीवाद के मुख्य सिद्धान्त एक जैसे हैं, दोनों में मुख्य अन्तर नस्ल की उच्चता का है। नाजी विचारधारा में नस्ल की श्रेष्ठता को स्वीकार किया गया है जबकि फासीवाद इस बारे में शान्त है। **हिटलर** का कहना था कि इस संसार में जाति के अतिरिक्त सभी कुछ कूड़ा-करकट है। (All that is not Race is trash.) नाजियों की मान्यता थी कि मानव समाज में गोरी जातियाँ काली अथवा पीली जातियों से श्रेष्ठ हैं। गोरी जातियों में ट्यूटन तथा ट्यूटनों में जर्मन अथवा नॉर्डिक (Nordic) या आर्य जाति सर्वश्रेष्ठ है। हिटलर ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, "मनुष्य जाति की वह सम्पूर्ण संस्कृति, कला और प्रविधि जो हमारे सामने है केवल आर्य जाति की सृजनात्मक प्रतिभा का परिणाम है।" जर्मन जाति की श्रेष्ठता का कारण उसमें रक्त की पवित्रता है। रूसियों में मंगोल जातियों के रक्त का मिश्रण हुआ है। फ्रेंच लोगों में अन्य जातियों का रक्त मिश्रित है। केन्द्रीय यूरोप की विभिन्न जातियों की भी यही स्थिति है। अमरीका में तो यूरोप की सभी जातियों का मिश्रण हुआ है। अतः विशुद्धतम होने से जर्मन जाति सर्वोच्च है, उसकी धमनियों में विशुद्ध नॉर्डिक रक्त प्रवाहित हो रहा है। संसार में सभ्यता के विकास का श्रेय इसी जाति को है।

हिटलर का कहना था कि यहूदी नस्ल उन सब बुराइयों का अवतार है जिनका शिकार आज जर्मनी हो रहा है। जर्मनी के विरुद्ध जो राजनीतिक कुचक्र चलाए जा रहे हैं उनमें यहूदियों का हाथ है। वे देश की सारी सम्पत्ति हड़पने में लगे हुए हैं। यहूदी लोग परजीवी पशुओं से तनिक भी अच्छे नहीं हैं, अतः उनका उन्मूलन करना ही ठीक है। जब तक जर्मनी में एक भी यहूदी विद्यमान है, तब तक संसार की सबसे बड़ी संस्कृति खतरे में है। **हिटलर** के शब्दों में, "इतिहास से स्पष्ट है कि जो राष्ट्र यहूदियों को अपने में अंगीकार कर लेते हैं और उन्हें वे सब अधिकार दे देते हैं जिनका वे स्वयं उपभोग करते हैं, तो वे यहूदी-विष से शीघ्र ही अथवा कुछ विलम्ब से नष्ट हो जाते हैं।"

2. रक्त और मिट्टी (Blood and Soil) **का सिद्धान्त**—राष्ट्रीय समाजवाद के रक्त और मिट्टी के सिद्धान्त का आशय यह है कि समाज में वर्तमान मनुष्यों की एकता के पीछे उनके आदिम (Tribal) समय की एकता है। यह राष्ट्रीय समाजवाद उसी नस्ल की खोज करता है जो मनुष्य की मूल एकता के पीछे पायी जाती है। उसकी मान्यता है कि कानून विवेक का आदेश न होकर लोकादेश है। उसका मत है कि रक्त का सम्बन्ध आर्थिक सम्बन्ध से अधिक शक्तिशाली है।

3. सर्वाधिकारी राज्य (Totalitarian State) **का समर्थन**—राष्ट्रीय समाजवाद का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य था साम्राज्य विस्तार। इसकी पूर्ति के लिए वह प्रत्येक व्यक्ति और साधन का उपयोग करना चाहता था। नाजी राज्य में समाज के सभी वर्गों, समुदायों और सभी साधनों का उपयोग इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए किया गया। सरकारी नियन्त्रण सभी क्षेत्रों में था। अभिव्यक्ति और संचार के सभी साधन इसके प्रचार के माध्यम थे।

4. आर्थिक स्वावलम्बन और स्वायत्तता—राष्ट्रीय समाजवाद या नाजीवाद आर्थिक स्वावलम्बन और स्वायत्तता के माध्यम से सैनिक शक्ति को प्रबल बनाने का समर्थक था। उसकी मान्यता यह थी कि दूसरे

लोगों पर निर्भर रहने से सैनिक शक्ति में कमी आती है इसलिए अर्थतन्त्र भी राज्य के नियन्त्रण में होना चाहिए।

5. हिंसा और युद्ध में विश्वास—राष्ट्रीय समाजवाद अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हिंसा और युद्धों में विश्वास रखता है। नस्ल की श्रेष्ठता में विश्वास के कारण हिटलर यह मानता था कि श्रेष्ठ जाति को विश्व पर शासन करना चाहिए। क्योंकि हिटलर जर्मनी की आर्यों की नार्डिक शाखा को सर्वश्रेष्ठ जाति मानता था इसलिए उसका यह विश्वास था कि जर्मनी को पूरे विश्व पर शासन करना है। इसलिए वह हिंसा और युद्ध का समर्थक था और डार्विन के योग्यतम की विजय (Survival of the fittest) के सिद्धान्त में विश्बास रखता था।

6. लिबेन्सरम के सिद्धान्त का समर्थक—लिबेन्सरम का सिद्धान्त विस्तारवादी नीति का सिद्धान्त था। हिटलर ने इस सिद्धान्त को अपनी पुस्तक 'मीन काम्फ' में स्थान दिया और इसे अपने राजनीतिक जीवन में अपनाया। हिटलर का मत था कि जो राष्ट्र अपना विस्तार नहीं करता वह जीर्ण होकर मृत्यु को प्राप्त होता है। हिटलर पश्चिमी शक्तियों को विसैन्यीकरण करके रूस को जीतना चाहता था क्योंकि राष्ट्रीय समाजवादियों ने नारा दिया था कि, "रूस पर किसी प्रकार अधिकार जमा लो फिर संसार अपना है।" रूस की विजय के पीछे उसकी यह धारणा थी कि रूस की संस्कृति वहाँ के जर्मन अल्पसंख्यकों की देन है इसलिए जर्मन उसके स्वाभाविक नेता और शासक हैं।

7. लोक और नेता में विश्वास—राष्ट्रीय समाजवाद अथवा नाजीवाद की-यह मान्यता है कि व्यक्ति जातीय लोक का ऋणी होता है। व्यक्ति के समस्त मूल्य, आचार तथा वैज्ञानिक सत्य सम्बन्धी मूल्य लोक से प्राप्त होते हैं। व्यक्ति का सबसे अधिक सम्मान इस बात में है कि वह जातीय लोक की रक्षा और विकास में सहयोग करे। हिटलर यह मानता था कि प्रत्येक राष्ट्र में ऐसे अधिकांश व्यक्ति होते हैं जो साधारण होते हैं अर्थात् न बहुत वीर होते हैं और न बुद्धिमान, न अच्छे होते हैं न बुरे। वे सामाजिक संघर्ष में पहल न करते हुए अपने विजेता के अनुयायी होते हैं।

हिटलर की यह मान्यता थी कि चुने हुए लोगों के शिखर पर एक नेता होता है। समस्त कार्य नेता के नाम पर होते हैं। नेता एक प्रकार का भाग्य देवता होता है। उसकी शक्ति का आधार यह है कि उसकी जड़ें जाति के जीवन में गहरी जमी होती हैं। जनता उसका अनुसरण प्रेरणा के कारण करती है। नेता 'हीरो' होता है। वह शुद्ध जाति का व्यक्ति होता है।

नाजी पार्टी का कार्यक्रम (Programme of Nazi Party)

हिटलर की नाजी पार्टी के कार्यक्रम में निम्नलिखित बातें निहित थीं—

(1) वर्साय की सन्धि को रद्द कराया जाये।

(2) जर्मन भाषा बोलने वाले जर्मन जाति के लोग जिन प्रदेशों में निवास करते हैं उन सबको मिलाकर एक विशाल जर्मन गणराज्य का निर्माण किया जाये।

(3) महायुद्ध से पहले एशिया और अफ्रीका में जो प्रदेश जर्मनी के अधीन थे, उन्हें फिर से प्राप्त किया जाये।

(4) जर्मनी की सैन्य शक्ति को क्षीण कर देने के लिए जो व्यवस्थायें वर्साय की सन्धि में की गयी हैं उन्हें हटा दिया जाये और जर्मनी फिर से अपनी सैन्य शक्ति को बढ़ाने में तत्पर हो।

(5) यहूदी लोग जर्मन नहीं हैं। महायुद्ध में जर्मनी की पराजय के प्रधान कारण में यहूदी लोग ही थे जो जर्मनी में निवास करते हुए भी जर्मन नहीं। इन यहूदियों से जर्मन नागरिकता के सब अधिकार छीन लिए जायें और उचित तो यही होगा कि उन्हें जर्मनी से निकाल दिया जाये।

(6) जो समाचार-पत्र और संस्थायें देशभक्ति की भावना के विपरीत प्रचार करती हैं, उन्हें बन्द कर दिया जाये।

(7) साम्यवाद का विरोध किया जाये और जर्मनी राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर अपनी सर्वतोमुखी उन्नति के लिए तत्पर हो।

हिटलर और नाजी पार्टी के उदय के कारण (Causes for the Rise of Hitler and Nazi Party)

हिटलर और नाजी पार्टी के उदय के अग्रलिखित कारण थे—

1. वर्साय की सन्धि—प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् जर्मनी के साथ मित्र राष्ट्रों ने वर्साय की जो सन्धि की वह जर्मनी के लिए अपमानजनक थी। उसमें जर्मनी को सैनिक, आर्थिक और औद्योगिक दृष्टि से पंगु बनाने का प्रयास किया गया था। जर्मनी को यह सन्धि स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया था। जर्मनी के लोग राष्ट्रीय कलंक को मिटाने के लिए एक ऐसे नेता की तलाश में थे जो जर्मनी को पुनः गौरव और प्रतिष्ठा दिला सके। हिटलर के रूप में उन्हें ऐसा नेता मिल गया। हिटलर ने जर्मन जनता को विश्वास दिलाया कि वह वर्साय की सन्धि की धज्जियाँ उड़ा देगा। उसने अपनी पुस्तक *मीन काम्फ* (*Mein Kamf*) में लिखा कि, "वर्साय की सन्धि का क्या उपयोग किया जा सकता है ? इसकी प्रत्येक बात को जर्मन जाति के दिल और दिमाग में इस प्रकार भर दिया जाये जिससे कि छः करोड़ जर्मन जनता के दिल में घृणा उत्पन्न हो जाये। इसका परिणाम यह होगा कि सबके मुँह से एक आवाज निकलेगी हम फिर हथियार लेंगे।"

हिटलर ने अपने भाषणों में अपने देश की जनता को सन्देश दिया, "राष्ट्र के पुनरुत्थान के लिए तन-मन-धन सर्वस्व अर्पित करना होगा, इससे भी अधिक कष्ट सहने होंगे, हमें वर्साय की सन्धि का अन्त करना होगा, सम्पूर्ण जर्मन राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधकर विशाल जर्मन राष्ट्र का निर्माण करना होगा।" जनता उसके नारों से मोहित हो गयी।

2. जातीय परम्परा एवं चरित्र—जर्मन जाति स्वभावतः सैनिक मनोवृत्ति की थी। जर्मन लोगों में वीर पूजा और अनुशासन की भावना थी। हिटलर की विचारधारा भी उनके स्वभाव से मेल खाती थी। जर्मन लोगों को यह लगा कि हिटलर उनका नेता (फ्यूहरर) बन सकता था।

3. संसदीय शासन व्यवस्था में अविश्वास—जर्मन की जनता राजतन्त्र की अभ्यस्त थी। वाईमार गणराज्य की संसदीय प्रणाली में उसका बिल्कुल विश्वास नहीं था। जनता एक ऐसे व्यक्ति को अपना भाग्य-विधाता बनाना चाहती थी जो "जर्मनी को दयनीय स्थिति से उभार सके। हिटलर और नाजी पार्टी ने इस मनोदशा का लाभ उठाया।"

4. वाईमार गणराज्य से असन्तोष—हिटलर और नाजी पार्टी के उदय का एक कारण जर्मनी के वाईमार गणराज्य का असफल होना था। अपने 15 वर्ष के जीवन में वाईमार गणराज्य जर्मन जनता की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सका। भीषण आर्थिक कठिनाइयों के साथ-साथ विदेश नीति में भी जर्मनी की प्रतिष्ठा स्थापित नहीं हो सकी। अतः जर्मन जनता की आस्था अधिनायकवादी शासन के प्रति ही बनी रही। **हार्डी** के शब्दों में, "जर्मन जनता में संसदीय प्रणाली से बहुत निराशा और असन्तोष विद्यमान था। उन दिनों राजनीतिज्ञ कोई ठोस कार्य अथवा महत्त्वपूर्ण निर्णय करने के स्थान पर केवल व्यर्थ की बकवास और झूठे वायदे किया करते थे। इस स्थिति से असन्तुष्ट जर्मन नागरिक एक ऐसे शक्ति सम्पन्न व्यक्ति की आवश्यकता का अनुभव करने लगे, जो जर्मनी की समृद्धि और प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करे।" हिटलर ने जनता की इस भावना का पूरा लाभ उठाया।

5. 1930 की आर्थिक मन्दी—1930 में भीषण आर्थिक मन्दी आयी। हिटलर ने कहा कि जर्मन पूँजीपति और यहूदी इसके लिए उत्तरदायी हैं। उसने घोषणा की कि जर्मन जनता की दुर्दशा का कारण जर्मनी की वर्तमान सरकार है जो साम्राज्यवादी देशों के समक्ष घुटने टेक चुकी है। हिटलर के आह्वान पर ऋणग्रस्त किसान और बेरोजगार व्यक्ति नाजी पार्टी में सम्मिलित हो गये। जर्मन जनता को हिटलर और उसकी नाजी पार्टी में ही अपना भविष्य दिखायी देने लगा।

6. हिटलर का व्यक्तित्व—हिटलर के असाधारण और प्रभावशाली व्यक्तित्व ने उसके स्वयं के और नाजी पार्टी के उत्थान में सहयोग दिया। उसमें जनता की मनोदशा को समझने तथा अपने भाषणों से जनता को मन्त्रमुग्ध करने की शक्ति थी। उसमें नेता (फ्यूहरर) बनने के सभी गुण मौजूद थे। जर्मन समाज को आकर्षित करने की उसमें अपूर्व क्षमता थी। **एफ. ली. बेन्स** के शब्दों में, "हिटलर एक कुशल मनोवैज्ञानिक था, एक चतुर जननेता था और एक श्रेष्ठ अभिनेता था। वह एक साधन-सम्पन्न आन्दोलनकारी, एक अनथक कार्यकर्ता और एक सुयोग्य संगठनकर्ता था।"[1]

7. आकर्षक कार्यक्रम—हिटलर ने जर्मन जनता के समक्ष अत्यन्त आकर्षक कार्यक्रम रखा जो जनता की इच्छाओं, परम्पराओं और विचारधारा के अनुकूल था। हीगल का उग्र राष्ट्रीयता के विचारों से ओतप्रोत कार्यक्रम सहज ही जर्मन जनता के दिल और दिमाग में बैठ गया।

---

1 "Hitler was an adept psychologist, a clever damagogue, and a master showman, he was a resourceful agitator, a tireless worker, and an able organiser." —*F. Lee Benns*

8. साम्यवाद का भय—हिटलर ने जर्मन जनता के समक्ष साम्यवाद का भय बहुत बढ़ा-चढ़ाकर रखा। उसने यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि यदि जर्मनी से साम्यवाद का प्रसार होता है तो इससे सोवियत रूस का प्रसार बढ़ जायेगा और यदि साम्यवादी सरकार बन गयी तो जर्मनी पर रूस का अधिकार हो जायेगा। जर्मन जाति की सभी आशाओं पर पानी फिर जायेगा। हिटलर को वहाँ के पूँजीपतियों ने खुला समर्थन और आर्थिक सहायता दी जिससे हिटलर ने उत्साहित होकर साम्यवादियों को जेल में बन्द कर दिया।

9. हिटलर को युवकों, सैनिकों और नौकरशाही का समर्थन—हिटलर की सफलता का एक कारण यह भी था कि उसे जर्मन युवकों, सैनिकों और नौकरशाही का पूर्ण समर्थन मिला।

उपर्युक्त सभी कारण हिटलर के उत्थान में सहायक सिद्ध हुए और अन्त में 1933 में वह जर्मनी का सर्वे-सर्वा बन गया और नाजी क्रान्ति पूर्ण हो गयी।